IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, 2021

कार्यशील अथवा सेवायोजित महिलाओं की सामाजिक पृष्ठभूमि : एक अध्ययन

डॉ0 श्वेता महता
शोध निर्देशिका (समाजशास्त्र विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

मोनिका सहारण
शोधार्थी (समाजशास्त्र विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

भूमिका

महिलाओं के कार्यशील होने से पारम्परिक पारिवारिक प्रणाली में परिवर्तन हुआ है। सेवायोजित महिलाओं की भूमिका प्रस्थिति घर की चहारदीवारी में बने रहने वाली भूमिका प्रस्थिति से भिन्न हुई है। महिलाओं के कार्यशील होने से उत्पन्न पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन की समस्याओं से समायोजन की जो नई शैली उत्पन्न हो रही है, उससे सामाजिक परिवर्तन का बोध होता है।

कार्यशील महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति

सेवायोजित महिलाओं के सामने सबसे बड़ा जटिल प्रश्न विशेषकर भारतीय परिवेश में भूनिका पुंज के यथोचित तादात्म्य से है, जिसकी अनुपस्थिति में पारिवारिक और सामाजिक असन्तुलन व्याप्त होते है। प्राय बहुत सी युवा उम्र की सेवायोजित महिलाएं ऐसी है जो अपनी भूमिका पुज को यथोचित रूप में एक साथ वहन नहीं कर पातीं। प्रस्तुत अध्ययन में कार्यशील महिलाओं के सामने एक प्रश्नसूचक स्थिति है। शोध के विश्लेषण से यह परिलक्षित होता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त बहुत सी महिलाए जो विविध क्षेत्रों तथा अध्यापन क्षेत्र में सेवायोजित हैं उनमें एक ही समय में परिवार, व्यवसाय क्षेत्रों तथा सामाजिक दायरे में विविध विषम प्रवृत्ति की भूमिकाओं को पूरा करना पड़ता है। निष्कर्ष के आधार पर अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि समाज द्वारा सम्प्रेषित विषम भूमिकाएं जो महिलाओं के सामने पेश की गई है उससे प्रभावित हुई है। सेवायोजित महिलाओं का उन्मेष परिवार में पति माँ–बाप, बच्चे, सास–ससुर व्यवसाय क्षेत्र आदि में एक समान नहीं हो पाता। उन्हें मुक्त समाज में अध्यापक, क्लर्क, वकील, अधिकारी, कर्मचारी की भूमिका अपनानी है। जिसकी तरफ वे ज्यादा सचेत हैं। क्योंकि इन्ही भूमिकाओं से उनके व्यक्तित्व में वृद्धि हुई है तो दूसरी तरफ सास–ससुर की निगाहों में एक बहू या मात्र पारिवारिक अधिष्ठात्री, बच्चों की पोषिका आदि की प्रत्याशाएं जुड़ी हुई हैं। उपर्युक्त सन्दर्भ में प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से यह इंगित किया जाता है कि भारतीय संदर्भ में सेवायोजित महिलाएं द्वंद और कार्यभ्रामकता की स्थिति महसूस करती है। कारण यह है कि

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 11, 2021

व्यवसाय में जहां इनकी आर्थिक स्वतन्त्रता देखकर इनमें वैयक्तिक एवं सामाजिक चेतना को जाग्रत किया है। वहां पर बुजुर्ग पीढ़ी आज भी इन्हें हर शिक्षा, योग्यता और वाह्य कार्यों के कौशल रखने के बावजूद भी घर की मालकिन, बहू और गृहपत्नी के रूप में ही ज्यादा देखने की कोशिश करता है।

उपर्युक्त विवेचन की पश्चिमी विद्वानों में प्रो० आर० के० मर्टन महिलाओं के सेवायोजित होने का मुख्य कारण आर्थिक आवश्यकता है। परन्तु शिक्षा, समानता और आधुनिकीकरण की चेतना महिलाओं को सेवायोज होने के लिए प्रेरित करती है। सेवायोजित महिलाओं के कार्य एवं परिवार में संघर्ष की स्थिति भी रहती है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हम एक कार्यकारी उपकल्पना बना कर चले थे। आधुनिक मनोवृत्ति और आर्थिक दबाव के कारण महिलाएं सेवायोजन के क्षेत्र में प्रवेश करती है। महिलाओं के सेवायोजित होने से पारिवारिक और वैवाहिक समायोजन की समस्याएं उत्पन्न होती है, क्योंकि इस सन्दर्भ में जो भी प्रश्न किए गए, उनमें अधिकांश सेवायोजित महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि उनके द्वारा नौकरी करने से पारिवारिक जीवन में तनाव उत्पन्न हुए हैं और इस तनाव के परिणामस्वरूप परिवार में विभिन्न असंगतियां उत्पन्न हो गई है। उनसे निरन्तर समायोजन और पुर्नसमायोजन करने का प्रयास किया जाता है, किन्तु सेवायोजित क्षेत्र को छोड़ने का संकल्प नहीं किया जाता है।

उपर्युक्त उपकल्पना का परीक्षण निम्नलिखित के सन्दर्भ में किया गया है–

1. कार्यशील महिलाओं का सामाजिक स्वरूप।
2. कार्यशील महिलाओं के पति में आर्थिक स्तर का प्रमापन।
3. कार्यशील क्षेत्र में कार्य करने के कारण।
4. कार्यशील सम्बन्धी समस्याओं से अभियोजन।
5. कार्यशील से उत्पन्न वैवाहिक समस्याओं का निराकरण।
6. कार्य और परिवार से समायोजन के स्वरूप, वैवाहिक और पारिवारिक समायोजन के समाकलन का प्रयास किया गया ।

कार्य और परिवार से समायोजन के स्वरूप, वैवाहिक और पारिवारिक समायोजन के समाकलन का प्रयास किया गया है। इक्कीसवीं शताब्दी के शुरुआत में सांस्कृतिक प्रतिमान में जो सबसे बड़ा संघातक परिवर्तन हुआ है वह परिवार एवं घर की प्रकृति में परिवर्तन है। जो मुख्यत महिला आंदोलन महिला स्वतंत्रता तथा उनके वेतन भोगी नौकरियों के फलस्वरूप घटित हुआ है। इस प्रक्रिया में सामाजिक तथा धार्मिक प्रक्रिया में जो शिथिलता आई है, वह भी जिम्मेदार है।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

नियोजित मातृत्व तथा जनसंख्या नियोजन के अभियानों ने परिवार के आकार को छोटा किया है। सन्तानोत्पत्ति तथा विवाह बदले परिवेश में अपरिहार्य आवश्यकताएं नहीं रहीं।

परिवार स्वयं ही बहुत से संदर्भों में गृह कार्यों का केन्द्र अब नहीं रहा। जहां भोजन, पोषण, मनोरंजन प्रमुख कार्य थे, वहां नगरीय जीवन इसको नया स्वरूप दे रहा है। बाजार अर्थव्यवस्था ने गृहिणी की भूमिकाओं को भी पूर्व निर्मित वस्तुएं प्रदान की हैं। परिणामस्वरूप परिवार जो आदत. व्यवहार, अनुशासन, धर्म, विचार, आदर्श आदि से प्रशिक्षण में पोषणशाला या पालने का कार्य करता रहा, वर्तमान में इन्हीं कार्यों को यह पूरा नहीं कर रहा है और चलचित्र, रेडियों, टेलीविजन, पत्र–पत्रिकाओं आदि ने पारिवारिक परिवेश में माँ–बाप के शैक्षणिक एवं अनुशासनिक व्यवस्थाओं को छीन रखा है।

महिलाओं के व्यवसाय में संलग्नता के परिणामस्वरूप बच्चों और परिवार के अन्य युवा सदस्यों को सामाजिक बन्धनों से काफी स्वछंदता मिल चुकी है। बच्चों में माँ–बाप की बदलती जीवन पद्धति, आदत एवं व्यवहारों का प्रभाव इस रूप में पड़ा है कि माँ–बाप के आधिपत्यमूलक प्रस्थिति बच्चों की पुष्टि में प्रायः श्रेयहीन होती जा रही है। इस प्रकार के बदलते परिवेश में परिवार से लेकरप्रशिक्षण संस्थाओं तथा व्यवसाय से लेकर उच्च सांस्कृतिक संस्थाओं तक सामाजिक तादात्म्य स्थापित करने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार की कुछ भूमिका नर्सरी स्कूलों की है जिनका सर्वप्रथम विकास इग्लैण्ड, इटली, फ्रांस और जर्मनी में हुआ। भारतीय समाज में भी विशेषकर नगरीय परिवेश में विभिन्न क्षेत्रों में संलग्न पति–पत्नी अपने कार्यों में व्यस्त रहते और बच्चों का दाखिला नर्सरी स्कूलों में होता है। इस प्रकार परिवार नाम का जो समुच्चय है वह प्रायः लुप्त दिख पड़ता है किंचित भोजनकाल और रात्रि निवास ही नगरीय समुदाय में परिवार का एक छोटा सा सिनेमामयी रूप प्रस्तुत कर पाता है। वस्तुतः सेवायोजित महिलाओं का परिवार केवल मात्र पति–पत्नी के रूप में दिखाई देता है। प्रो० डब्ल्यू आगवर्न के द्वारा दी गई वर्तमान परिवार की परिभाषा का व्यापारिक चित्रण हमें सेवायोजित महिलाओं के परिवार से मिलता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषणों तथा सामान्यीकृत निष्कर्षो से स्पष्ट होता है कि कार्यशील महिलाओं ने अपने विकास के लिए सभी क्षेत्रों में दृढ़ता से प्रवेश किया है संक्षेप में कहा जा सकता है कि कार्यशील

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

महिलाओं के सेवायोजित होने से उनकी आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक आदि प्रवृत्तियों के प्रति चेतना तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में अत्यधिक विकास हुआ है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 इण्डियन काउसिल आफ सोशल सांइस रिसर्च, ''स्टेटस आफ वीमन इन इंडिया'' ए सिनोपसिस आफ द रिपोर्ट आफ द नेशनल कमेटी, नई दिल्ली एलाइड पब्लिशर्स प्राईवेट लि0 1975।

2 A.A. Roback, The Psychologyof Character, 1952

3 Freude, New Introduction by Hectures on Psychoananlysis